अंतरा-शब्दशक्ति

मुझ से .. मुझ तक ..

ग़ज़ल संग्रह

जय कृष्ण चांडक 'जय'

मुझ से,.. मुझ तक,..!

(ग़ज़ल संग्रह)

जयकृष्ण चांडक 'जय'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-61-1

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- जयकृष्ण चांडक 'जय'

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Mujh se Mujh tak By Jaykrishna chandak 'Jay'

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

मित्रों, ये आज तक भी पता नहीं चला मुझे कि एक विशुद्ध व्यापारी होने के बावजूद ये कलम कहां से हाथ में आ गई,... जबकि हमारी पिछली सात पीढ़ियों में कोई भी लेखक नहीं रहा,... पर पहले जो भी थोड़ा बहुत लिखा,... कुछ लोगों की सराहना मिली,... तो और लिखा,... बस यहीं से मेरी काव्य यात्रा की शुरुआत हुई,.. हिन्दी काव्य गोष्ठियों और उर्दू नशिष्तों में लगातार जाने लगा,... फिर हरदा और हरदा से बाहर कवि सम्मेलनों के मंचों पर भी काव्य पाठ का सौभाग्य प्राप्त हुआजो फिलहाल अनवरत जारी है,... हालांकि अपनी पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक जवाबदारीयों के चलते साहित्यिक यात्रा कई बार बाधित हुई है, पर प्रभु कृपा से कलम अपने लिये वक्त निकाल ही लेती है, ये बात अलग है कभी बैठकर या सोचकर नहीं लिखा,... बस राह में चलते, सफर करते या बातचीत में,मेरी अधिकतर रचनाएं हुई,...!

'मुझ से,... मुझतक,..!' शीर्षक रखने का उद्देश्य महज़ इतना है,... कि जितनी भी ग़ज़लें इस संग्रह में शामिल हैं,.. उनके शब्द कहीं ना कहीं मेरे जीवन एवं मेरी भावनाओं का हिस्सा रहे हैं,.. या ये कहूं कि मुझे परिभाषित करते हैं,.. शायद इन ग़ज़लों में आप वे सारे एहसास

पाएंगे,जो मुझसे होकर पाठक के मन तक पहुंचकर उसके एहसास हो सकते हैं,..!

मेरा यह प्रयास अब आपके हाथों में है, आप इसे कितना पसंद करते हैं, ये मैं नहीं जानता,... पर आपकी निष्पक्ष राय की प्रतीक्षा अवश्य रहेगी,... बहुत-बहुत धन्यवाद डॉ प्रीति सुराना जी एवं अंतरा परिवार,..!

जयकृष्ण चांडक 'जय'

अनुक्रमणिका

1. इश्क़ के रास्तों से गुज़र जाऊं मैं		7
2. जीने के अरमान, वक्त से	8	
3. तय अगर फासला	9	
4. खुशनुमा जिंदगी नहीं आती	10	
5. दीन, ईमान सारे धरम बह गए		11
6. फिर अंधेरे से छली लगती है	12	
7. या कहूं अब फासला अच्छा हुआ		13
8. अपनी कीमत निकाल कर रखना		14
9. मौत की ये सज़ा		15
10. बेवजह रार, हो गई शायद	16	
11. रिंद, साक़ी, मयकदे की बात हो		17
12. अब तो चल ज़िंदगी		18
13. दर्द के आसपास, रहने दे		19
14. मातृभूमि पर शीश झुकाऊं	20	
15. एक मुश्किल थी मेरी		21
16. वो ग़ज़ल गीत गाती		22
17. अब बस्ती में चौक-चौबारे	23	
18. मैं बुलाता रहा		24
19. मेरे सवाल पर वो खुलके मुस्कुराया	25	
20. सच मुलाकात का	26	
21. इस तरह क्यों भुलाया		27
22. जो हकीकत है		28
23. यार मुमकिन हो तो		29
24. घायल हुऐ नदियां के धारे	30	
25. फिर से इल्ज़ाम लेके आया है		31
26. कुछ दिनों में यहां लौट आएगा		32

इश्क़ के रास्तों से गुज़र जाऊं मैं

इश्क़ के रास्तों से गुज़र जाऊं मैं,
बात दिल की कहूं या ठहर जाऊं मैं!

इस घुटन में भला कैसे जी पाऊंगा,
कुछ दिनों के लिए काश मर जाऊं मैं!

जब परिंदे मिले मुझको परदेस में,
मन हुआ लौटकर अपने घर जाऊं मैं!

वो ज़ालिम है तो उसकी धमकी से अब,
ये तो मुमकिन नहीं है के डर जाऊं मैं!

हद से ज्यादा बुरा जब ज़माना मिला,
किस तरह, कैसे बोलो सुधर जाऊं मैं!

अब न राहें बचीं 'जय'न मंज़िल कोई,
क्यों इधर जाऊं मैं क्यों उधर जाऊं मैं!

जीने के अरमान, वक्त से

जीने के अरमान, वक्त से,
लबों की मुस्कान, वक्त से!

कीमत की तभी तो पाई,
अपनी ये पहचान, वक्त से!

रुकना नहीं है चलते जाना,
सीखो, है आसान, वक्त से!

चलो सदा जो साथ वक्त के,
न होगा नुकसान, वक्त से!

हूं काफिर फिर भी करता हूं,
आरती और अजान, वक्त से!

यही तो केवल एक बडा है,
बडा नहीं इंसान, वक्त से!

बैठे रहने से क्या होगा 'जय',
कुछ करने की ठान, वक्त से!

तय अगर फासला, होने वाला नहीं

तय अगर फासला, होने वाला नहीं,
इश्क़ का सिलसिला, होने वाला नहीं।

दूर हो जाऊं तुझसे ये मुमकिन नहीं ,
मुझसे ये फैसला, होने वाला नहीं।

लाख इंसा खुदाई का दावा करे,
वो कभी भी ख़ुदा, होने वाला नहीं।

मंज़िले इश्क़ का आखिरी मोड़ है,
उससे अब सामना, होने वाला नहीं।

आईने की हक़ीक़त से वाक़िफ हूं मैं,
मैं कभी आईना, होने वाला नहीं।

सुर्ख़ियों में तेरी 'जय' ग़ज़ल आ गई,
फिर से ये हादसा, होने वाला नहीं।

खुशनुमा जिंदगी नहीं आती

खुशनुमा जिंदगी नहीं आती,
ग़र तेरी दोस्ती नहीं आती।

गीत लिखता हूं शेर कहता हूं,
मत कहो शायरी नहीं आती।

मैं तरफदार हरदम सच का हूं,
झूठ की पैरवी नहीं आती।

मौत आती है रोज़ ही मुझ तक,
इक मगर ज़िंदगी नहीं आती।

चांद आता है संग में हरदम,
तन्हा क्यूं चांदनी नहीं आती।

दीप जलता हुआ तो लगता है,
उससे अब रौशनी नहीं आती।

फ़क्त यादें ख़ुदा ही काफ़ी है,
जब तलक़ बंदगी नहीं आती।

रौशनी बंटती ग़र बराबर से,
'जय' के घर तीरगी नहीं आती।

दीन, ईमान सारे धरम बह गए

दीन, ईमान सारे धरम बह गए,
सारी खुशियां बहीं थोडे ग़म बह गए।

पाप कितने किये इस जनम के लिये,
इनके चक्कर में कितने जनम बह गए।

गीत, ग़ज़लों से जब भी हुआ सामना,
नामधारी सभी मोहतरम बह गए।

प्यार सच्चा था जिनका सभी बच गए,
पत्थरों के थे जितने सनम बह गए।

आएंगे दिन कभी तो हमारे भले,
पांच सालों के सारे भरम बह गए।

कोई कीमत नहीं है भलाई की 'जय',
डूबतों को बचाया और हम बह गए।

फिर अंधेरे से छली लगती है

फिर अंधेरे से छली लगती है,
धूप भी आज जली लगती है।

ये जो शोहरत है आजकल मेरी,
मेरे अपनों को खली लगती है।

हैं करोड़ों के बिछोने फीके,
गोद मां की ही भली लगती है।

हाथ मां- बाप का जो है सिर पे,
मौत आए तो टली लगती है।

खून से सींचो तब कहीं जाकर,
बाग में एक कली लगती है।

फिर से 'जय' आज मुस्कुराया है,
फिर दुआ एक फली लगती है।

या कहूं अब फासला अच्छा हुआ

या कहूं अब फासला अच्छा हुआ,
या कहूं ये सिलसिला अच्छा हुआ।

बोल सच वो टूटकर बिखरा मिला,
झूठ का था आईना अच्छा हुआ।

आज इक मेरी ज़रा सी बात पर,
रूठकर बैठा ख़ुदा अच्छा हुआ।

कैसे वो नज़रें मिलाता आज फिर,
ना हुआ जो सामना अच्छा हुआ।

चाह दौलत की नहीं मुझको कभी,
साथ तेरा मिल गया अच्छा हुआ।

दूर तुझसे ज़िंदगी 'जय' जा रहा,
कोई शिकवा ना गिला अच्छा हुआ।

अपनी कीमत निकाल कर रखना

अपनी कीमत निकाल कर रखना,
सिर्फ इज़्ज़त संभाल कर रखना।

वो गिरे जब भी तेरे हक में हो,
ऐसा सिक्का उछाल कर रखना।

फिर तो उसको यकीन आएगा,
यूं कलेजा निकाल कर रखना।

अब गुज़ारा नहीं है यारों से,
चंद दुश्मन भी पाल कर रखना।

ज़िंदगी सुन ले मौत आए तो,
कुछ दिनों उसको टाल कर रखना।

ज़िंदगी भर के लिए 'जय' उसको,
अपने सांचे में ढाल कर रखना।

मौत की ये सज़ा

मौत की ये सज़ा, मैंने मांगी नहीं,
जिंदगी से अदा, मैंने मांगी नहीं!

हाथ हरदम उठे दूसरों के लिए,
अपने हक में दुआ, मैंने मांगी नहीं!

बस निभाता रहा बेवफाई तेरी,
कभी तुझसे वफा, मैंने मांगी नहीं!

ऐसे बीमार मन के हकीमों से भी,
मर गया पर शिफा, मैंने मांगी नहीं!

बात थी जो वतन की तो मिटना पड़ा,
जिंदगी से रज़ा, मैंने मांगी नहीं!

और क्या दूं मैं 'जय' जब ये पूछे ख़ुदा,
चीज़ तुझसे जुदा, मैंने मांगी नहीं!

बेवजह रार, हो गई शायद

बेवजह रार, हो गई शायद,
जीत भी हार, हो गई शायद!

देख हालत ये उसकी लगता है,
वक्त की मार, हो गई शायद!

और कुछ भी ये कह रही आंखें,
दो से अब चार, हो गई शायद!

कैसी मायूसी घर में लगती है,
अम्मा बीमार, हो गई शायद!

दोस्त मेरा वो फिर बगल में है,
चाकू पे धार, हो गई शायद!

फिर से इस पार रह गया 'जय' तो,
वो तो उस पार, हो गई शायद!

रिंद, साक़ी, मयकदे की बात हो

रिंद, साक़ी, मयकदे की बात हो,
हो नाम मेरा जब नशे की बात हो।

जाईये न इस तरह की महफिलों में,
लापता जिनमें पते की बात हो।

दूरियां उनसे रखो जिनके लिए,
प्यार करना बस मज़े की बात हो।

साथ सच का सब वहां पर दिजीये,
जब देशहित में फैसले की बात हो।

जश्ने आज़ादी मनाते लोग यूं,
जैसे अभी बारह बजे की बात हो।

हो एक 'जय' तेरा ही चेहरा सामने,
जब कभी भी आईने की बात हो।

अब तो चल ज़िंदगी

अब तो चल ज़िंदगी।
मत मचल ज़िंदगी।

मैं बदल जाऊंगा,
तू बदल ज़िंदगी।

और कितनी लिखूं,
अब ग़ज़ल ज़िंदगी।

कितनी मायूस है,
आजकल ज़िंदगी।

सत्य की राह पर,
चल निकल ज़िंदगी।

जादू- टोना भी है,
है रमल ज़िंदगी।

व्यर्थ की बात पर,
मत बहल ज़िंदगी।

है अगर मुश्किलें,
तो है हल ज़िंदगी।

'जय' को अच्छा बना,
कर पहल ज़िंदगी!

दर्द के आसपास, रहने दे

दर्द के आसपास, रहने दे,
थोडा दिल को उदास रहने दे!

कोई क़ातिल नहीं तुम्हारे सिवा,
बेसबब ये तलाश रहने दे!

अपने हिस्से में तीरगी ही सही,
उनके हिस्से उजास रहने दे!

छोड़ दे कल पे कल जो होना है,
ज़िन्दगी बस क़यास रहने दे!

हो समंदर भी तेरे अंदर पर,
एक कतरे की प्यास रहने दे!

तेरे ज़मीर से 'जय' वाकिफ़ है,
तन के उजले लिबास रहने दे!

मातृभूमि पर शीश झुकाऊं

मातृभूमि पर शीश झुकाऊं ये गगन, ओढ़ लूं आज,
एक तिरंगा बदन लपेटूं अपना वतन, ओढ़ लूं आज!

अम्नो-अमान हो फिर से कायम ग़र वादियां महक उठे,
काश्मीर की केशर क्यारी अपने बदन, ओढ़ लूं आज!

तुलसी, सूर, मीरा, कबीर, ग़ालिब, फिराक़, रसखान,
एक की ग़ज़ल मैं गाऊं, एक के भजन, ओढ़ लूं आज!

आजादी के मतवालों की राह सभी को चलना है,
जन-जन के मन में अलख जगे ये लगन, ओढ़ लूं आज!

जीवन की अंतिम सांस अपनी कर दूं देश पर अर्पण,
मिट जाने का ज़ज्बा लेकर इक कफन, ओढ़ लूं आज!

एक मुश्किल थी मेरी

एक मुश्किल थी मेरी जो हल, न हुई,
ज़िन्दगी आज तक भी सरल, न हुई!

मैं ज़माने के संग ना चला इसलिये,
झोपडी मेरी अब तक महल, न हुई!

साहूकारों के जैसी मेरी ज़िन्दगी,
ब्याज में कट गई पर असल, न हुई!

बाद आज़ादी के फिर मेरे देश में,
इक भगतसिंग सी पैदा नसल, न हुई!

आपकी तारीफें और मिली दाद भी,
फिर भी कहते हो अच्छी ग़ज़ल, न हुई!

आपका प्यार है जब मेरे साथ फिर,
ज़िन्दगी 'जय' की कैसे सफल, न हुई!

वो ग़ज़ल गीत गाती

वो ग़ज़ल गीत गाती, रही रात भर,
शायरी मुस्कराती, रही रात भर!

सांस आती रही, सांस जाती रही,
ज़िन्दगी आज़माती, रही रात भर!

दूर जाती रही उसकी यादें मग़र,
वो उन्हे पास लाती, रही रात भर!

नींद तेरी कहीं, आंख मेरी कहीं,
ख़्वाब दोनो सजाती, रही रात भर!

तीरग़ी में न जाने क्यों जीता रहा,
दीप तो वो जलाती, रही रात भर!

'जय' भटकता रहा खोज में प्रीत की,
रात राहें बताती,रही रात भर!

अब बस्ती में चौक-चौबारे

अब बस्ती में चौक-चौबारे, ढूढेंगें,
बंशी, सीटी और गुब्बारे, ढूढेंगें।

तेरा साथ मिले अगर तो हम भी अब,
सहरा- सहरा चांद- सितारे, ढूढेंगें।

फिर तेरी सूरत के जैसी सूरत इक,
हम जैसे आशिक बेचारे, ढूढेंगें।

मंझधारों से फुरसत जब भी मिलेगी तब,
सुकूं से अपने लिये क़नारे, ढूढेंगें।

एक नहीं कई बार मिले हैं लगता है,
क्या हैं ये रब के इशारे, ढूढेंगें।

ख़्वाहिशें अब एक भी ज़िंदा कहां,
दफनाने कुछ और मज़ारें, ढूढेंगें।

लहू ये लाशें और नहीं 'जय' चलो कहीं,
अम्नो- अमान वाले नज़ारे, ढूढेंगें।

मैं बुलाता रहा

मैं बुलाता रहा ऐ ज़माने बहुत।
तू बनाता रहा बस बहाने बहुत।

चलने वाले हो इसपे नये अब मगर,
रास्ते इश्क़ के हैं पुराने बहुत।

फिर कसौटी पे सच की कसा है मुझे,
झूठ आते रहे आजमाने बहुत।

दर्द ही दर्द है जब यहां हर तरफ,
तुम लगे खामखां मुस्कुराने बहुत।

आज सूरज क्या निकला ज़रा देर से,
चंद जुगनु लगे टिमटिमाने बहुत।

ये महल तेरा घर हो मुबारक तुझे,
सबके दिल में हैं 'जय' के ठिकाने बहुत।

मेरे सवाल पर वो खुलके मुस्कुराया

मेरे सवाल पर वो खुलके मुस्कुराया, है,
लो मेरा दर्द ही अब मेरे काम आया, है!

हर खुशी के तले नया ही ग़म मिला मुझको,
मेरी इस ज़िंदगी ने क्यों मुझे हंसाया, है!

बुझा चिराग मुहब्बत का तो सोचा मैंने,
कि मैंने तुझको या तूने मुझे गंवाया, है!

बुतपरस्ती की ज़रुरत नहीं रही तबसे,
मां के कदमों में जबसे मैंने सर झुकाया, है!

अभी-अभी तो ये नज़रें मिली तेरी मुझसे,
अभी ही इस जहां ने हादसा बनाया, है!

कभी तो मुड़ कर देखले मुझे मेरे हमदम,
के कितनी दूर से चलकर यहां 'जय' आया, है!

सच मुलाकात का

सच मुलाकात का, तुमसे किसने कहा?
झूठ उस रात का, तुमसे किसने कहा?

है नशीला ये दिन और चढ़ा है मुझे,
रंग बरसात का, तुमसे किसने कहा!

तय हुआ जो कभी, था मुझे ही पता,
सौदा हालात का, तुमसे किसने कहा?

ना समझ पाए तुम, ना मैं समझा कभी,
अर्थ उस बात का, तुमसे किसने कहा?

दरमियां कोई मसला हमारे न था,
जीत का मात का, तुमसे किसने कहा?

चांद-तारों को ही बस निमंत्रण मिला,
'जय' की बारात का, तुमसे किसने कहा?

इस तरह क्यों भुलाया

इस तरह क्यों भुलाया, हमें आपने,
कर दिया फिर पराया, हमें आपने!

बीच मंझधार में छोडकर चल दिये,
कुछ कहा ना बताया, हमें आपने!

ख़्वाब में आपके संग फिर रातभर,
किसलिये, क्यों जगाया, हमें आपने!

अपनी यादों में भी, मेरे वादों में भी,
हर घड़ी आजमाया, हमें आपने!

अपनी राहों में क्यूं रोशनी के लिये,
दीप जैसा जलाया, हमें आपने!

जब सुना मैने ये, चौंककर रुक गया,
'जय' कहकर बुलाया, हमे आपने!

जो हकीकत है

जो हकीकत है, हमने देखी है,
जितनी हिम्मत है, हमने देखी है!

पेट भरना है घर में बच्चों का,
ये ज़रूरत है, हमने देखी है!

पास जितना हो वो हो मेहनत का,
इसमे इज़्ज़त है, हमने देखी है!

दिल किसी का न टूटे तूझसे कभी,
ये नसीहत है, हमने देखी है!

अपने मां-बाप की खिदमत करना,
बस इबादत है, हमने देखी है!

नामे मजहब कभी न लड़ना 'जय'
सब सियासत है, हमने देखी है!

यार मुमकिन हो तो

यार मुमकिन हो तो, नज़रों में बसा ले मुझको,
कितना अच्छा हो जो , पहलू में बिठाले मुझको!

एक हसरत है कि रोशन हो कभी जीस्त मेरी,
मेरे हिस्से के ज़रा सौंप, उजाले मुझको!

राहें उल्फ़त में कई बार, जिसे तोडा हो,
टूटा वादा ही समझ अब तो निभाले मुझको!

इक हसीं बात कही, शम्मा से परवाने ने,
तन्हा जलती है, कभी संग जलाले मुझको!

मैं ये कहता हूं, समंदर के भी तूफानों से
दम अगर है तो, कभी साथ बहाले मुझको!

कब से उम्मीद थी, एक रोज़ तुझे पा लूंगा,
खुद से रुठा है "जय", इक बार मनाले मुझको!

घायल हुऐ नदियां के धारे

घायल हुऐ नदियां के धारे क्या करें।
डूबे सब उसके किनारे क्या करें।

कोई भी इंसां यहां ज़िंदा कहां है,
जितने हैं मुर्दे हैं सारे क्या करें।

चांदनी है आज फिर रुठी हुई,
कैसे मनाऐं चांद-तारे क्या करें।

जेल तन की और सज़ा सांसों की है,
कैद हैं हम सब बेचारे क्या करें।

ऐ खुशी कुछ देर को तो पास आ,
क्या करें हम ग़म के मारे क्या करें।

देखली 'जय' लडकर बाज़ी इश्क़ की,
सब जीतने वाले भी हारे क्या करें।

फिर से इल्ज़ाम लेके आया है

फिर से इल्ज़ाम लेके आया है,
वो मेरा नाम लेके आया है।

है खुशी ये के फिर खुशी का यहां,
कोई पैग़ाम लेके आया है।

आम जनता को आज इक नेता,
बांटने आम लेके आया है।

यार है जो मेरा ख़ुदा वाला,
वो मेरा राम लेके आया है।

रात के बाद फिर ये दिन देखो,
सुरमई शाम लेके आया है।

जीत न पाया वो जो दुनिया से,
'जय' का हमनाम लेके आया है।

कुछ दिनों में यहां लौट आएगा

कुछ दिनों में यहां लौट आएगा क्या?
वो पुराना समां लौट आएगा क्या?

साये मायूसी के ये हट भी जाएं अगर,
फिर से रौशन जहां लौट आएगा क्या?

उस शहीद की मां सोचती रात-दिन,
वो गया है कहां लौट आएगा क्या?

जिनके कदमों के नीचे ज़मीं न रही,
उनके सर आसमां लौट आएगा क्या?

थोडी मोहलत यदि मिल भी जाए अगर,
जो जहां था वहां लौट आएगा क्या?

और कितने दिनों 'जय' बचीं दूरियां,
प्यार फिर दरमियां लौट आएगा क्या?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - जय कृष्ण चांडक 'जय'
जन्म - 09 दिसम्बर 1972
माता - पुष्पादेवी चांडक?
पिता - स्व.श्री गोवर्धनदास जी 'चांडक'
पता - 'रमण विला' चांडक चौराहा, हरदा,
जिला- हरदा, म.प्र. 461331
विधा - चित्रकला, मूर्तिकला, रांगोली, गायन एवं काव्य लेखन।
कार्यक्षेत्र - कृषि उपकरण निर्माता एवं स्टील फेब्रीकेशन इंडस्ट्रीज।
पद 1. अध्यक्ष - मध्यप्रदेश लेखक संघ, इकाई हरदा।
2. जिला संयोजक - राष्ट्रीय कवि संगम, जिला इकाई हरदा।
3. उपाध्यक्ष - तुलसी साहित्य अकादमी, जिला इकाई हरदा।
4. सचिव - हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जिला इकाई, हरदा।
5. प्रभारी - सांस्कृतिक प्रकोष्ठ, म.प्र. वैश्य महासम्मेलन, हरदा।
6. संयोजक - हरदा कल्चर सोसायटी।
प्रकाशन - खुश्बुऐं गज़ल, साहित्य सुरभि, हम परिंदों से प्यार करते हैं (साझा संग्रह)।
गुंजन, मकरंद (मुक्तक संग्रह), एक गज़ल संग्रह प्रकाशाधिन।
सम्मान - विशेष प्रतिभा सम्मान- 2016, हमकदम साहित्य प्रतिभा सम्मान 2017।
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान।
कृषि उपज मंडी समिति के द्वारा कला के क्षेत्र में सम्मान।
माहेश्वरी समाज के द्वारा विशेष सम्मान।
प्रतिभा मंच दिल्ली के द्वारा नवोदित गज़लकार सम्मान।
गणतंत्र दिवस पर मध्यप्रदेश विधानसभा अध्यक्ष द्वारा साहित्य सेवा सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-61-1
मूल्य- 55/-